हिन्दी निबन्ध का विकास क्रम

हिन्दी प्रतिष्ठा II

Prof - Raushan Kumar
J. K. C biraul DBG.

⇒ निबन्ध उस गद्य रचना को कहते है जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को स्वच्छंद रूप में इस प्रकार व्यक्त करता है कि सारी रचना एक सूत्र मे बंधी हुई प्रतीत होती है। हिन्दी की अन्य गद्य विधाओं के समान हिन्दी निबंध का विकास भी भारतेन्दु युग से प्रारम्भ हुआ। इस काल में भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास हो रहा था। पढ़े-लिखे लोग अपने विचारों को स्वच्छतापूर्वक एक निजीपन के लिए हुए ढंग से स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में लगे हुए थे। इस समय तक हिन्दी की अनेक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी थी। हरिश्चन्द्रिका, उदंत मार्तण्ड, ब्राह्मण, प्रदीप बनारस अखबार, सार सुधानिधि आदि इस काल में छपने लगी थी। इन पत्र पत्रिकाओं में विभिन्न विषय पर जो विचार व्यक्त किए जाते है.. उन्हे ही हिन्दी निबंध का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। लेखकें के समक्ष अनेक विषय थे। वे सामयिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, विषयो पर प्राय: निबन्ध के माध्यम से प्रकाश

Ajanta PRODUCTS
Page No.
Date

डालते रहते थे। स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि हिन्दी के प्रारंभिक निबंध पाठ्यक्रम से सीधे जुड़े हुए थे।

भारतेन्दु युग के निबंधकारों ने साधारण से साधारण और गम्भीर से गम्भीर विषयों पर निबंधों की रचना की। सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों पर स्वच्छंद रूप से विचार व्यक्त करते हुए इन्होंने हिन्दी निबंध को विकास पथ पर अग्रसर किया संक्षेप में हिन्दी निबंध के विकास को चार कालों में विभक्त किया जा सकता है यथा -

(1) भारतेन्दु युग
(2) द्विवेदी युग —
(3) शुक्ल युग —
(4) शुक्लोत्तर युग —

आदि।